22

वर्ष : 2018-19

ISSN : 0976-5778

# ईसुरी

बुन्देलखण्ड के धर्म-आध्यात्म और पर्यटन पर केन्द्रित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

# ईसुरी-22

**( पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका )**

**अंक - 22, वर्ष - 2019 ISSN : 0976-5778**

**संरक्षक**

प्रो. आर.पी. तिवारी (कुलपति)

कर्नल आर.एम. जोशी (कुल सचिव)

**प्रधान संपादक**

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

**संपादक**

राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

**सहायक संपादक**

विवेकानंद उपाध्याय

मनीष कुमार

**प्रबंध संपादक**

आशुतोष कुमार मिश्र

**प्रकाशक**

**बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग**

**डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय**

**सागर ( म.प्र. )**

# एरण एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल

**डॉ. नागेश दुबे***

एरण, मध्यप्रदेश के सागर जिला की बीना तहसील में सागर नगर से 77 कि.मी. उत्तर-पश्चिम दिशा में (2405,10, उत्तरी अक्षांश तथा 98010,20 पूर्वी देशान्तर) पर स्थित है।[1] विदिशा से इसकी दूरी 72 कि.मी. व साँची से यह 82 कि.मी. उत्तर-पूर्व है।[2] एरण बेतवा (प्राचीन बेत्रवती) की सहायक बीना नदी (प्राचीन बेण्वा) के तट पर स्थित है। बीना नदी उत्तर-पश्चिम एवं पूर्व दिशा से एरण को अपने घेरे में लेकर अर्द्धचन्द्राकार रूप में प्रवाहित होती हुई, उसको स्वाभाविक सुरक्षा प्रदान करती है, दक्षिण दिशा में ताम्रपाषाणकाल में निर्मित किया गया था।[3] एरण से प्राप्त ताम्रमुद्राओं के पृष्ठभाग पर निर्मित चिह्नों से भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है। कनिंघम महोदय के अनुसार इन मुद्राओं पर अंकित अर्द्धवृत्त पुराने एरण नगर की स्थिति को प्रदर्शित करता है तथा नदी का चिह्न बीना नदी (प्राचीन बेण्वा) का संकेत करता हैं, जिसके तट पर एरण नगर बसा हुआ था।[4] भौगोलिक दृष्टि से एरण का महत्व अधिक रहा है, क्योंकि इसके एक ओर बुन्देलखण्ड तथा दूसरी ओर मालवा का भू-भाग है अतः यह बुन्देलखण्ड क्या मालवा के मध्य एक प्रवेश-द्वार के समतुल्य था।[5] पूर्वी मालवा की सीमा रेखा पर अवस्थित होने के कारण यह दशार्ण तथा चेदि महाजनपद को जोड़ता था।[6]

एरण तक जाने के लिए चार मार्ग है। पहला मार्ग खुरई होकर जाता है। सागर-बीना सड़क मार्ग पर खुरई से 4 कि.मी. की दूरी पर निर्तला नामक ग्राम से एरण तक 16 कि.मी. पक्की सड़क है। जो सिलगाँव, लेटवास, धंसरा, जाऊखेड़ी ग्राम होकर जाती है। दूसरा मार्ग बीना-भोपाल रेलमार्ग पर स्थित मण्डीबामोरा रेलवे स्टेशन से जाता है। रेलवे स्टेशन से एरण 12 कि.मी. की पक्की सड़क है। जो गौहर धंसरा, जाऊखेड़ी ग्रामों से होकर जाती है। तीसरा मार्ग तहसील मुख्यालय बीना से नौगाँव, मेऊली, कोरजा, सतौरिया से बीना नदी तक एक किलोमीटर कच्चा मार्ग हैं, इसके बाद बीना नदी को नाव द्वारा पार करके एरण पुरास्थल तक पहुँचा जा सकता है। चौथा मार्ग बीना से कुरवाई बरुअल, शेकपुर होते हुए एरण तक 29 किलोमीटर का पक्का सड़क मार्ग है।[7]

प्राचीनकाल में एरण जनपद, प्रदेश तथा विशेष रूप में प्रसिद्ध था हूण शासक तोरमाण के अभिलेख में एरण का उल्लेख 'विषय के रूप में हुआ। नगर और प्रदेश के रूप में एरण का उल्लेख गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के एरण अभिलेख में 'स्वभोगनगरे एरिकिण प्रदेशे अभिलिखित है।[8] इतिहाकारों ने स्वभोगनगर का अर्थ आमोद-प्रामोद का नगर लगाया है। इससे स्पष्ट होता है, कि समुद्रगुप्त ने इस रमणीय स्थल पर कुछ

---

*प्राध्या. एवं विभागाध्यक्ष, प्राचीन भा. इति., संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विवि सागर (म.प्र.)

समय निवास किया होगा।[9] एरण से मिट्टी की एक मुहर मिली है, जो आकार में गोल है। उसके ऊपरी भाग पर 'गजलक्ष्मी का अंकन है और निचले भाग पर ऐरिकिणेगोमिक विषयाधिकरण' लेख अभिलिखत है, इससे स्पष्ट होता है कि गुप्त काल में 'गोमिक नामक विषय 'एरिकण' मुक्ति के अधीन था।[10] बुद्धगुप्त के अभिलेख में इस क्षेत्र का कालिन्दी-नर्मधोमध्ये अर्थात् यमुना और नर्मदा के मध्य के भू-भाग के रूप में उल्लेख किया गया है।[11] एरण से प्राप्त शक शासक श्रीधर वर्मा के अभिलेख में एरण प्रदेश का उल्लेख 'अधिष्ठान के रूप में मिलता है, अधिष्ठान का आशय नगर से लिया गया है।[12] मुक्ति तथा विषय के रूप में सीमा विस्तार क्या रहा होगा, इसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं होता है।

सर्वप्रथम एरण को खोजने का श्रेय ब्रिट्रिस कप्तान टी.एस. बर्ट को जाता है। 1838 ई. में उन्होंने बुद्धगुप्त का एरण अभिलेख व तोरमाण का वराह मूर्तिलेख खोजा था। उसी वर्ष जेम्स प्रिन्सेफ ने पाठ और अनुवाद सहित उसे प्रकाशित कराया।[13] तात्पश्चात 1861 ई. में डॉ. फिटज एडवर्ड हाल ने इसका संशोधित पाठ प्रकाशित कराया। डॉ. हाल के बाद जनरल अलेक्जेण्डर कनिंघम और फेथफुल फ्लीट ने इस अलिलेख का सम्पादन किया।[14] कप्तान टी. एस. बर्ट पूर्व सर्वेक्षण के आधार पर कनिंघम सर्वेक्षण के लिए एरण गये और भानुगुप्त के सेनापति गोपराज का अभिलेख व समुद्रगुप्त का अभिलेख सर्वप्रथम कनिंघम महोदय ने 1874-75 ई. में खोजा था। इसे आर्क्योलॉजिकल रिपोटूर्स ऑफ इण्डिया की दसवीं जिल्द में प्रकाशित करवाया।[15] और एरण से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री को अपने ग्रन्थ 'रिपोटूर्स ऑफ टूर्स इन बुन्देलखण्ड एण्ड मालवा में प्रकाशित करवाया।[16] 1959-60 में सागर विश्वविद्यालय पुरातत्व विभाग द्वारा इस क्षेत्र का सर्वेक्षण प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी के निर्देशन में किया गया और उत्खनन कार्य के लिए यह पुरास्थल चुना गया।

एरण में जो उत्खनन कार्य किये गये, उसका श्रेय मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय को जाता है, इस विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग द्वारा 1960 ई. से 1965 ई. में प्रो. के.डी. वाजपेयी व डॉ. उदयवीर सिंह के संयुक्त निर्देशन में उत्खनन कराया गया। इस उत्खनन में 20 निखाते (खदानें) ली गई। इस उत्खनन से मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति से युक्त पुरास्थल एरण प्रकाश में आया।[17] डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के पुरातत्व विभाग द्वारा ही दूसरी बार 1984-1985 ई. से 1986-87 ई. में प्रो. सुधाकर पाण्डेय व डॉ. विवेकदत्त झा के संयुक्त निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया। इस उत्खनन में लगभग 12 निखतें (खदानें) ली गई। जिससे एरण में नवपाषाण, काल व ताम्रपाषाण संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त हुये।[18] तीसरी बार 1998 ई. में डॉ. विवेकदत्त झा के निर्देशन में उत्खनन कार्य कराया गया। इन सभी उत्खननों से एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति पर विशेष प्रकाश पड़ा है।

मध्यप्रदेश के अनेक नगरों में सांस्कृतिक विकास हुआ, इन नगरों में एरण बुन्देलखण्ड का प्राचीनतम सामरिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है।[19] एरण का महत्व अपने कला वैभव के कारण विशिष्ठ हैं। एरण एक ऐसा केन्द्र हैं, जो अनेक काल खण्डों में सांस्कृतिक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहा हैं। मानवीय जीवन की निरंतर विकासशीलता की दृष्टि से इस प्राचीन स्थल का अध्ययन भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता है।[20] डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पुरातत्व विभाग द्वारा जो उत्खनन कार्य व सर्वेक्षण किये गये। जिनके परिणामरूवरूप एरण तथा समीपवर्ती स्थलों से प्रागेतिहासिक, आद्यैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युग के अतयंत महत्वपूर्ण अवशेषों की प्राप्ति हुई। जिनसे एरण का महत्व स्पष्ट होता हैं। एरण से समुद्रगुप्त का अभिलेख[21] बुद्धगुप्त का अभिलेख[22] भानुगुप्त का

अभिलेख[23] श्रीधर वर्मा का अभिलेख[24] हूण शासक तोरमाण का अभिलेख[25] प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल के सती स्तम्भ लेखों से एरण का महत्व उद्घाटित हुआ है।[26]

गुप्तकाल में समुद्रगुप्त ने इसे अपना आमोद-प्रमोद (स्वभोग) का नगर बनाया और कुछ समय समुद्रगुप्त अपनी पत्नि, पुत्र पौत्रों सहित एरण में रहा। इस समय एरण का विकास चरमोत्कर्ष पर था।[27] एरण को सागर जिले का प्राचीनतम ऐतिहासिक नगर होने का गौरव भी प्राप्त है। यह प्राचीन काल के प्रमुख राजमार्गों से जुड़ा था। एरण से एक राजमार्ग विदिशा होकर उज्जयिनी तथा दूसरा राजमार्ग एरण से कौशाम्बी होता हुआ वाराणसी जाता था।[28] राजपथ पर स्थित होने से इस स्थल का अपना विशेष महत्व था। प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी के अनुसार भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में मध्यप्रदेश का विशेष महत्व है। इस प्रदेश के अनेक पुरास्थलों के उत्खननों से प्राप्त सामग्री से ज्ञात होता है, कि यहाँ पर धर्म, आध्यात्म, साहित्य कला और ललितकला का सम्यक विकास हुआ। भारतीय कला के इतिहास में मध्यप्रदेश के सागर जनपद में एरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा।[29] मध्यप्रदेश सागर जिले की वर्तमान बीना तहसील के अंतर्गत एरण ग्राम (प्राचीन ऐरिकिण) आज भले ही एक सामान्य ग्राम हो किन्तु प्राचीनकाल में इसे भारत का एक विशिष्ट सामरिक एवं सांस्कृतिक स्थल होने का गौरव प्राप्त था।

एरण में प्रथम शती ईस्वी से लेकर छठी शती ईस्वी तथा पूर्व मध्यकाल, उत्तरमध्यकाल में मूर्ति निर्माण परंपरा का क्रमशः विकसित रूप परिलक्षित होता है। एरण में वैष्णव मत के एक महत्वपूर्ण एवं बौद्ध धर्म की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। गुप्तकाल में एरण वैष्णव मत के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। वैष्णव धर्म के मानने वाले कला मर्मज्ञ गुप्त सम्राटों के संरक्षण में यहाँ पर अनेक वैष्णव मंदिरों का निर्माण हुआ। उनमें भगवान विष्णु तथा उनके अवतारों की प्रतिमाएँ शैव, बौद्ध धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ जैन प्रतिमाओं का भी निर्माण गुप्तकाल में किया गया।[30] गुप्तकाल में निर्मित मंदिरों का प्रारंभिक रूप एरण में मिलता है। छोटे व सपाट गर्भगृह, पूजा स्थल, देव प्रतिमा युक्त मंदिर भारत के प्रारंभिक गुप्तकालीन मंदिरों की विशेषताएँ मानी जाती है।[31]

एरण में बीना नदी के दक्षिणी तट पर एरण के मुख्य सांस्कृतिक भग्नावशेष विद्यमान है। एरण के ये मंदिर समूह विष्णु व उनके अवतारों से संबंधित हैं। महाविष्णु मंदिर के अलावा इस स्थल पर महावराह मंदिर एवं नृसिंह मंदिर भी है। ये गुप्तकालीन तथा हूण काल के प्रारंभिक काल में निर्मित मंदिर साधारण ढंग से निर्मित किये गये थे। इनमें सपाट छत वाला गर्भगृह एवं चार पाषाण स्तंभों पर आधारित लघु मंडप है। एरण के मंदिर समूह को मंदिर-वास्तु का प्राचीनतम रूप माना जा सकता हैं, विद्वानों का मत है कि एरण में विष्णु, नृसिंह और वराह मंदिर स्थापित किये गये थे। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि एरण में उक्त तीन मंदिरों के समीप ही चौथा मंदिर भी गुप्तकाल में निर्मित किया गया था। डॉ. हरीसिंह गौर पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित महेश्वरदत्त व वराहदत्त द्वारा निर्मित नृवराह की प्रतिमा संभवतः इसी चौधे मंदिर में स्थापित थी। एरण में मंदिरों के छतें सपाट थी। आयताकार गर्भगृह में स्थापित देवमूर्ति के साथ समक्ष थोड़ा नीचा द्वार मंडप है। द्वार व स्तंभों को भाँति-भाँति रूप में अलंकृत किया गया है।[32]

मंदिर समूह के समीप ही केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा एक चबूतरे के ऊपर चार स्तंभ सुरक्षा की दृष्टि से खड़े किये गये हैं। इस चबूतरे पर कृष्णलीला से संबंधित आकृतियाँ वाले शिलाफलक लगे हैं। विष्णु मंदिर के सामने बुधगुप्त द्वारा स्थापित गरुड़ स्तंभ सागदीपूर्ण कला का जीता जागता प्रमाण है।[33]

एरण से गुप्तकालीन अनेक मंदिर व मूर्तियों के प्रमाण प्राप्त हुए है। एरण से दूसरी-तीसरी ईस्वी के शिवलिंग व नाग प्रतिमाएँ प्राप्त हुई। इससे स्पष्ट होता है कि एरण पर नाग शासकों का प्रभुत्व गुप्तों के पूर्व था। नाग शासकों के सिक्के भी इसकी पुष्टि करते हैं।

शक शासकों के शिलालेख, सिक्के व साँचे ढालने के साचों से स्पष्ट होता है कि एरण पर शकों का भी अधिकार था। एरण में तीसरी शती ईस्वी से लेकर छठी शती ईस्वी तक वैष्णव मूर्ति निर्माण परंपरा का क्रमशः विकसित रूप परिलक्षित होता है। वैष्णव मूर्तियों की शिल्प परम्परा में अनेक नवीन प्रतिमान एरण की गुप्तकालीन कला में प्राप्त हुए हैं। एरण में वैष्णव धर्म की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। एरण में भगवान विष्णु के अवतारों की प्रतिमाओं का निर्माण मुख्य रूप से किया गया था।[34] एरण गुप्तकाल में वैष्णव मत के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हो गया था। गुप्त शासक के संरक्षण में यहाँ पर विशाल विष्णु मंदिरों का निर्माण किया गया था। गुप्त काल में महाराजाधिराज समुद्रगुप्त ने इसे अपना 'स्वभोग नगर' बनाया। इसकी जानकारी हमें एरण से प्राप्त समुद्रगुप्त के अभिलेख से मिलती है।[35] गुप्तकाल में एरण का विकास चर्मोत्कर्ष पर था। यहाँ गुप्तकालीन विष्णु मंन्दिर नृसिंह मंदिर वराह मंदिर बनवाये गये जो आज भी दृष्टिगोचर होते हैं। एरण से प्राप्त गुप्तकालीन मंदिर एवं प्रतिमाओं का विवरण निम्न प्रकार है -

**महाविष्णु मंदिर एवं विष्णु प्रतिमा**

एरण में गुप्तकालीन मंदिर परिसर में महाविष्णु प्रतिमा विष्णु, मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित है। इस महाविष्णु मंदिर का निर्माण समुद्रगुप्त ने करवाया था। महाविष्णु मंदिर आयताकार है। इस मंदिर का बाहरी आकार 9.75 मीटर लंबा तथा 3.90 मीटर चौड़ा है। इसका गर्भगृह 5.40 मीटर लंबा एवं 1.80 मीटर चौड़ा है। कनिंघम ने लगभग 1875 ईस्वी में जब इस मंदिर को देखा था, तब मंदिर की छत गिर चुकी थी। एरण के विष्णु मंदिर में एक विकसित योजना के दर्शन होते हैं। गर्भगृह के मध्य स्थल पर भगवान विष्णु की विशाल चतुर्भुजी स्थानक प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा एक चौकी पर अवस्थित है। मूर्ति की उँचाई 13 फुट 2 इंच है। मूर्ति का मुख आंशिक रूप से खंडित है। इस प्रतिमा में विष्णु को समभंग-मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। निचला बाँया हाथ कट्यावलम्बित है, शेष हाथ लगभग खंडित है। दो भुजाएँ कूल्हों पर अवलम्बित हैं। प्रतिमा के दाहिनी और गदा बने होने का अवशेष है। परन्तु विष्णु का एक भी हाथ गदा से स्पर्श करते हुए प्रदर्शित नहीं किया गया है। हाथों में पकड़े हुए अस्त्र टूट चुके है, किन्तु उनके हत्थे अभी भी विद्यमान हैं जिनमें ही अस्त्रों की पहचान हो सकी है। प्रतिमा की भुजाओं के भुजबंध व हाथों में कड़े दिखलाये गये हैं। महाविष्णु की इस प्रतिमा की किरीट मुकुट का उत्कृष्ट रूप से अंकन हुआ है। इस पर सिंह मुख बना है। भगवान कण्ठहार धारण किए हुए है। पवित्र वैजयती माला उनके गले में सुशोभित है। कानों में कर्णकुण्डल, अग्रवाम हस्त की कनिष्ठा अंगुली अलंकृत छल्ला (मुद्रिका) अंगद, कंकण, कटिमेखला, धोती और पादवलय से सुशोभित देवता के मस्तक के पीछे विशाल प्रभामण्डल है। कण्ठहार के मध्य में दीर्घ वनमाला और मुकुट का अलंकरण दर्शनीय है।[36]

प्रतिमा सादगीपूर्ण है, अलंकरण बहुत कम है। महाविष्णु, प्रतिमा के नेत्र योगियों की भाँति अर्धोन्मीलित हैं। भगवान विष्णु जो धोती धारण किए हैं, सामने से उसका प्रंथिबंधन (गाँठ) सुस्पष्टता से दिखलायी पड़ता है। पृष्ठभाग में भी धोती चुन्न्टें उत्कीण की गई हैं। पृष्ठभाग में ही ग्रेवेयक- बंधन को सुन्दर तरीके से बाँधा गया है। रेखांकन के माध्यम से धोती का अंकन है। मेखला के नीचे बंधे कटिपट्ट के दोनों छोर बाँयी जंघा की ओर लटकते हुए अंकित हैं। वैजयंतीमाला धारण किये हुए मूर्ति तेज बल व पराक्रम को प्रदर्शित करती है तथा भव्य रूप का दर्शन कराती है। यह प्रतिमा एक ही विशाल पाषाण खण्ड को काटकर बनायी गयी है। इसकी चौकी मूल प्रतिमा के साथ निर्मित है। शंख,चक्र, गदा के अतिरिक्त देव अभयमुदा में कमल लिए हुए निर्मित किये गये हैं। कर्निधम के इस प्रतिमा के समीप इष्ट हर ग्रही लेख अंकित पाया। लिपि के आधार पर यह प्रतिमा चौथी शती ईस्वी की है। मंदिर की बनावट के आधार पर अधिकांश विद्वानों ने इसका निर्माणकाल लगभग 400 ईस्वी के मध्य माना है।[37]

**शेषशायी विष्णु प्रतिमाएँ**

एरण में शेषशायी विष्णु की मूर्तियों को तीन शिलापट्टों पर उकेरा गया है। यह प्रतिमाएँ गुप्तकाल में निर्मित है। पुराणों, आगमों तथा शिल्प शास्त्रों में शेषशायी विष्णु को अनंतशायी नारायण, और पद्मनाभ के नाम से पुकारा गया है। यह विष्णु का असाधारण एंव विशिष्ट रूप है। विष्णुधर्मोत्तर में विष्णु के शेषशायी रूप को पद्नाभ कहा गया है। जल के मध्य स्थित शेषनाग का सिर फैले हुए कणें में विद्यमान मणि तथा रत्नों की प्रभा से आलोकित रहता है। शेषनाग के शरीर की बनी हुई शैया पर चार भुजा वाले पद्मनाभ को शयन-मुद्रा में दर्शाया जाता है। महाभारत में शेषशायी-विष्णु की मूर्ति का निर्माण का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा विष्णुधर्मोत्तर पद्मपुराण, भागवत पुराण, रघुवंश तथा वैशानसागम में भी शेषशायी विष्णु की मूर्ति निर्माण से संबंधित विवरण दिये गये हैं।[38]

एरण में गुप्तकालीन मंदिर समूह के निकट ही केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा निर्मित चबूतरे पर लगे शिलापट्टों में से एक शिलापट्ट पर शेषशायी विष्णु को प्रदर्शित किया गया है। इस प्रतिमा में भगवान विष्णु को शेषनाग की शैया को कुण्डिलों के रूप में दृष्टव्य हैं, उन पर शयन-मुद्रा दर्शाया गया है उसके सिर पर शेषनाग के सात फण छत्र के समान फैले हुए हैं। विष्णु बाँये हाथ में चक्र और दाहिने में गदा लिए हुए हैं। किरीट मुकुट, एकावली, कर्णकुण्डल, दीर्घ वनमाला इत्यादि से सुशोभित देवता की नाभि से उद्भूत कमल पर ब्रह्म को बैठे प्रदर्शित किय गया है। यह प्रतिमा विष्णुधर्मोत्तर पुराण के निर्देशानुसार निर्मित है। ब्रह्मा की आकृति खण्डित है। विष्णु के पैरों के पास लक्ष्मी देवी को उनके पैर दबाते हुए प्रदर्शित किया गया है। उनके पीछे अंजुलिमुद्रा में एक नर व एक नारी बैठे हुए दिखाये गये हैं।

एरण में शेषशायी विष्णु की दूसरी प्रतिमा विष्णु मंदिर के समीप सुरक्षित है। परवर्ती गुप्तकाल में निर्मित यह मूर्ति खण्डित है। शेषनाग पर वनमालाधारी, विविध अलंकरणों से विभूषित विष्णु शयन-मुद्रा में निर्मित हैं। विष्णु के सिरोभाग के ऊपर शेषनाग का सप्तमुखी फण छत्र के रूप में शोभायमान है। कमर के नीचे से यह मूर्ति खण्डित हो चुकी है। शेष की कुण्डलियों पर शयन मुद्रा में विष्णु को द्विभुजी रूप में निर्मित किया गया है। दोनों हाथों के अग्रभाग कलाइयों के पास से खण्डित हैं। देवता का मुख भी खण्डित है विष्णु के शरीर पर अलंकरण के रूप में वनमाला, अंगद, कंकण, जनेऊ और कटिमेखला दृष्टव्य है। पाषाण चौकी के पायों के निकट तीन मानव मूर्तियाँ बैठी हुई मुद्रा में निर्मित हैं। तीनों मानव मूतियाँ अस्पष्ट सी हैं। इस प्रतिमा का निर्माण काल छटवीं शताब्दी ईस्वी के लगभग माना जा सकता है।[39] पीछे सपक्ष गरुड़ की मूर्ति बीरासन-मुद्रा में अंकित है। मानवाकार गरूण की इस लघु मूर्ति का गले के ऊपर का भाग तथा दोनों हाथ खण्डित हो चुके हैं।

**गरूड़ासीन विष्णु प्रतिमा :**

एरण पुरास्थल से एक गरुड़ासीन विष्णु की प्रतिमा प्राप्त हुई है।[40] यह प्रतिमा विष्णु मंदिर` गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सिरदल` ललाट बिम्ब पर गरुड़ासीन चतुर्भुजी विष्णु की आकृति बनी है। आकृति में गरुड़ के फैले पंखों के बीच में विष्णु बैठे हुए हैं। उनकी चार भुजाएँ हैं। दोनों दाहिने हाथों में क्रमशः चक्र और गदा है। बाँयें हाथों में शंख तथा कमल है। पक्षीराज गरुड़ विष्णु का वाहन है। विष्णु के गरुड़ासीन रूप का वर्णन अनेक ग्रंथों में मिलता है।[41]

**बराह मंदिर एवं महावराह प्रतिमा**

महावराह की यह विशाल मूर्ति एरण में स्थित वराह-मंदिर में स्थापित है। एरण स्थित यह भग्न मंदिर हूण शासक तोरमाण के प्रथम राज्य वर्ष का है। महाविष्णु मंदिर के दक्षिण में यह बराह मंदिर निर्मित था। एरण के प्राचीन मंदिरों में वराह मंदिर विशेष महत्व रखता है। यह मंदिर लगभग 485-500 ईस्वी के मध्य निर्मित किया गया था। कनिंघम ने जिस समय यह मंदिर देखा था, उस समय ही (1875 ई.में) यह ध्वस्त

रूप में था, परंतु महावराह की प्रचण्ड प्रतिमा सुरक्षित थी। इस मंदिर का निर्माण तोरमाण की सम्प्रभुत्ता स्वीकार करने वाले धन्यविष्णु द्वारा कराया गया था। प्रतिमा में वक्षस्थल पर तोरमाण के शासन काल का अभिलेख है। इस अभिलेख की खोज 1838 ईस्वी में कैप्टन टी. एस. बर्ट, द्वारा की गयी थी। बराह की यह मूर्ति गुप्तकालीन मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है। यह एक विशाल प्रतिमा है। पशुरूपी महावराह की मूर्ति को बड़े प्रभावशाली रूप में निर्मित किया गया है। यह मूर्ति एरण गाँव के पश्चिम में एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित मंदिर समूहों के दक्षिणी किनारे के पूर्वाभिमुख अवस्था में प्राप्त है।

महावराह की विशाल मूर्ति एक ही पत्थर को काटकर निर्मित की गयी है। इस प्रतिमा की लंबाई 13 फुट 2 इंच (4.19 मीटर) उँचाई 11 फुट 2 इंच (3.32 मीटर) तथा चौड़ाई 5 फुट $1^{1/2}$ इंच (1.53 मीटर) है।[42] महावराह की विशालकाय मूर्ति के संपूर्ण शरीर में ऋषियों और देवताओं की आकृतियों को उकेरा गया है। मूर्ति पर कमण्डल लिए हुए अनेक वस्त्रधारी ऋषियों का अंकन बहुत ही कलात्मक व सौन्दर्यपूर्ण ढंग से किया गया है। ऋषियों व देवताओं के अंकन होने से इस प्रतिमा को यज्ञवराह भी कहा गया है। महावराह के गले में एक भारी हार पड़ा है। इस पर अनेक तरह के अलंकरण उकेरे गये हैं। इन अलंकराणों के साथ कन्या मत्स्य आदि राशियों को उत्कीर्ण किया गया है। राशियों के मध्य मालाधारी विद्याधरों की लघु आकृतियाँ दिखाई पड़ती हैं। महावराह के संपूर्ण शरीर पर पक्तिबंद्ध बालखिल्य ऋषिगण बने हैं। कुछ ऋषि दाढ़ीयुक्त अंकित किए गए है तो कुछ की दाढ़ी नहीं है। प्रदर्शित भाव- विन्यास से ये सभी योगी दर्शित होते हैं। सभी अभयमुद्रा में उकेरे गये हैं।[43] महावराह की दाढ़ से लटकी हुई नारी-रूप में पृथ्वी प्रलय की पौराणिक कथा का प्रतीक है। द्विभुजी भू-देवी (पृथ्वी) बाँये हाथ से वराह की दाढ़ पकड़े हुए है। भू-देवी की आकृति का दाहिना हाथ जंघा के समीप झूलता हुआ दिखलाई पड़ता है। कुण्डल, हार, भुजबंध, चोली, कटिमेखला और चुड़ियों से सुशोभित भूदेवी की जाँघों के नीचे का भाग भग्नावस्था में है। महावराह के दाहिनी ओर ब्रह्मा कमण्डल व माला लिए दर्शित हैं। महावराह के बांयी ओर शंकर भगवान योगी के रूप में दिखलाये गये हैं। महावराह को नाग से आबद्ध किया गया हैं, नाग कुण्डलियाँ महावराह के नीचे दिखाई पड़ती है। वराह भगवान के निकट ही मनुष्य रूप में नाग-गण भग्न रूप में विद्यमान हैं। महावराह के कंधों पर चतुर्भुजी पार्श्वों वाला एक छोटा सा देवालय है। जिसके हर भाग में उसी के सृदश्य बैठी हुई आकृतियाँ हैं। यह प्रचण्ड प्रतिमा पर ऋषि देव राशियाँ, ब्रह्म, शिव, नाग विद्याधर की आकृतियाँ यह प्रदर्शित करती हैं कि महावराह, समस्त शक्तियों से पूर्ण पृथ्वी की रक्षा हेतु अवतरित हुए थे।

**कृष्ण लीलाओं को प्रदर्शित करते शिलापट्ट**

विष्णु के कृष्णावतार की कथा भागवत, विष्णु, हरिवंश आदि पुराणों में वर्णित की गयी हैं। जन्म तथा बाल्यवस्था से अंत तक जितनी भी लीलाएँ भगवान ने की उन सबका विवेचन वैष्णव पुराणों में हुआ है। भागवत पुराण तो कृष्ण चरित्र का ही वर्णन विस्तृत रूप से करता है। कृष्ण विष्णु के अवतार थे। कृष्णावतार से संबंधित कुछ दृश्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जैसे जन्म के समय बालक रूप, वासुदेव द्वारा उन्हें कारागार से ले जाने व यमुना पार कर यशोदा तक पहुँचाने, कृष्ण द्वारा अनेक राक्षसों का वध किये जाने की लीलाएँ बालक कृष्ण से संबंधित हैं। कालियामर्दन का दृश्य बड़ी भव्यता से प्रदर्शित हुआ है। यह रूप नाग सम्प्रदाय और कृष्ण सम्प्रदाय की प्रतिद्वदिंता का प्रतीक है। प्राचीन काल में नाग पूजा का अधिक प्रचलन था, कालांतर में कृष्ण सम्प्रदाय को प्रभावी दर्शाने के लिए, कृष्ण का कालियामर्दन प्रतिमा का विवरण प्रस्तुत किया है।[44] एरण के गुप्तकालीन मंदिर समूह स्थल में सुरक्षित गुप्तकालीन शिलापट्टों पर मूर्तिकारों ने अनेक पौराणिक दृश्य अंकित किये हैं। कृष्ण जनम तथा अन्य लीलाओं से संबंधित दृश्य रोचक तथा सुंदर हैं। केन्द्रीय पुरातत्व

विभाग द्वारा निर्मित चबूतरे के आधार में लगे शिलापट्टों पर कृष्णलीला से संबंधित विभिन्न दृश्य दृष्टव्य हैं। कृष्णलीला को प्रदर्शित करने वाले शिलापट्टों का एरण में प्राप्त होना गुप्तकाल में भागवत सम्प्रदाय की लोकप्रियता का सूचक है।

**गरूड़ ध्वज स्तंभ**

गरूड़ गुप्त सम्राटों का राज्य चिन्ह था। एरण में स्थापित गरुड़ स्तंभ के शीर्ष पर निर्मित मानवाकार गरुड़ की मूर्ति के साथ नागों का अंकन है। दो अग्रभागों वाली यह मूर्ति अपने हाथों में नाग पकड़े हुए है। इस मूर्ति में गरुड़ द्वारा नागों को पकड़े जाने से आशय निकलता है कि नाग गरुड़ से काफी भयभीत रहते हैं। नाग गरुड़ का भोजन है। एरण में नागों का दमन रूप में मूर्तिबद्ध किये जाने का एक आशय यह भी निकलता है कि एरण में वैष्णव धर्म पालन करने वाले गुप्त शासकों से पहले नागवंशी शासकों का आधिपत्य था। नागों को पराजित कर गुप्तों ने वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार इस क्षेत्र में किया। नागों को पराजित करने व वैष्णव धर्म का प्रभाव उन पर स्थापित होने को वैष्णव धर्म को देव मूर्तियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। वैष्णव संस्कृति की नाग संस्कृति पर विजय को प्रदर्शित किया गया है।

एरण गुप्तकालीन पुरास्थल पर गरुड़ स्तंभ अपने मूल स्थान पर आज भी खड़ा हुआ है यह गरुड़ ध्वज स्तंभ कुल 48 फुट ऊँचा है। गुप्त सम्राट बुधगुप्त के सामंत मातृविष्णु तथा धन्यविष्णु द्वारा स्थापित यह गरुड़ स्तंभ सादगीपूर्ण उत्कृष्ट कला का प्रमाण है। स्तंभ नीचे चौपहलू किंतु 6.1 मीटर की ऊँचाई के बाद 2.60 मीटर तक अठपहलू है जिसके ऊपर शीर्ष भाग है। शीर्ष भाग के निचले भाग में घंटाकार अधोमुखी कमल की आकृति है। कमल के ऊपर निर्मित फलक के ऊपरी भाग पर एक दूसरे से पीठ सटाये सिंह बैठे निर्मित किये गये हैं। जिनके ऊपर गरुड़ की 1.70 मीटर ऊँची मानवकार प्रतिमा खड़ी हुई अवस्था में स्थापित है। गरूड़ की मानवाकृतियों के पृष्ठभागों को संलग्न रूप से प्रदर्शित करने के कारण पृष्ठभागों को संयुक्त कर दिया गया है। जिसके फलस्वरूप गरुड़ की इस मानवकार प्रतिमा के अग्रभाग ही दिखलाई पड़ते हैं। गरूड़ की द्विभुजी आकृतियों के हाथों में नाग को पकड़े हुए प्रदर्शित किया गया हैं।[45]

**शैव प्रतिमाएँ**

वैदिक काल में शिव का रूद्र रूप अधिक प्रचलित था।[46] शिव की प्रतिमा और लिंग की उपासना का सर्वप्रथम विवरण बौधयन गृहासूत्र में मिलता है। महाकाव्यों में सर्वोच्च देवता के रूप में शिव पूजित हैं। पुराण काल में अत्याधिक शक्तिशाली देवता के रूप में शिव पूर्णतः स्थापित हो चुके थे। कुषाण काल में प्रतीक और मानव दोनों ही रूपों में शिव की प्रस्तर मूर्तियाँ निर्मित होने लगी थी। गुप्तकाल में निर्मित अनेक शिवलिंग और प्रतिमाएँ अभिलिखित हैं। इनमें एरण एवं करदण्डा अभिलेख, तथा भानुगुप्त के शासन काल का गोपराज-सती अभिलेख उल्लेखनीय है। एरण में शिव की लिंग का व मानव प्रतिमा दृष्टव्य है।[47] एरण पर गुप्तवंशीय शासकों का लंबे समय तक शासन रहा। इस काल में शिव की लिंग प्रतिमा के साथ-साथ मानवीय रूप में प्रस्तर प्रतिमाएँ निर्मित हुईं। गुप्तकालीन साहित्य और कला में शिव की सम्पूर्ण मानवीय रूप प्रतिमाओं का अंकन हुआ है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण, वृहत्सहिता और अन्य कई पुराणों में उनके मानवीय रूप का चित्रण हुआ है। मत्स्य पुराण, वायु व ब्रम्हाण्ड पुराण में शिव की मानवीय प्रतिमा निर्माण के निर्देश उल्लिखित हैं। गुप्तकालीन कलाकारों ने उपर्युक्त निर्देशों को ध्यान में रखकर अधिकतर शिव प्रतिमाओं का निर्माण किया है। एरण से प्राप्त योगी रूप में निर्मित शिव की मूर्ति स्थानक मुद्रा में है। इसका उल्लेख प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी ने भी किया है, उनके विवरणानुसार यह शिव प्रतिमा दण्ड धारण किये हुए हैं, जो जटाजूट, आभूषण और फेंटेदार धोती आदि से सुसज्जित है। बाँये एक छोटा सा गण को भी निर्मित किया गया है। शिव की योगी रूप में यह प्रतिमा महावराह की प्रचण्ड रूप में जो

कि एरण के मंदिर समूहस्थल पर प्रतिष्ठित है, पर बाँयीं ओर निर्मित की गई है। अलंकृत आभूषण कलात्मक सौन्दर्य को दर्शाते है। शिव की यह द्विभुजी प्रतिमा है। एक हाथ में दण्ड धारण किये हुए है। एरण से गुप्त, गुप्तोत्तर एवं पूर्वमध्यकालीन शिवलिंग मिले हैं।[48]

**प्राग्-गुप्तकालीन मुखलिंगः-**

यह मुख लिंग एरण में माताटीला पर स्थित है। इसकी ऊँचाई 1.5 मीटर है। मोटाई 23 वर्ग सेमी है। मस्तक पर तीसरा नेत्र, अर्द्धचन्द्र व मस्तक के बाजू में सर्प फण का अंकन है। गले में सर्प कुण्डली को बनाया गया है। यह मुखलिंग पूरे पत्थर पर निर्मित है। प्रतिमा के नेत्र ध्यान मुद्रा में बने हैं। मूर्ति प्राग्-गुप्तकालीन कला में निर्मित है।[49]

**अभिलिखित शिवलिंग**

महाभारत और रामायण में लिंगोपासना का उल्लेख मिलता हैं। विष्णुधर्मोत्तर अग्निपुराण, शिव पुराण आदि में लिंग निर्माण के निर्देश दिये गये हैं। उपलब्ध लिंगों को सामान्य लिंग, सहस्त्रलिंग और मुखलिंग में विभाजित किया जा सकता है। गुप्तकाल में शिवपुजा शिवलिंग के रूप में अधिक प्रचलित थी। एरण से बड़ी संख्या में लिंगोपासना के प्रमाण मिल चुके हैं। गुप्तकाल में शैवधर्म उपासना का प्रारंभिक प्रमाण एरण से मिलता है। एरण में अभिलिखित शिवलिंग की खोज 1875-76 ई. में जनरल कनिंघम द्वारा की गयी।

यह अभिलिखित शिवलिंग जिसे गोपराज-सती स्तंभ भी कहा जाता है। बीना नदी के बाँये किनारे पर एरण से लगभग आधा कि.मी. उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह स्थान पहलेजपुर तथा एरण के मध्य स्थित है। इस पर भानुगुप्त के शासनकाल का एक अभिलेख मिला है। इस शिवलिंग का निचला हिस्सा खण्डित हो गया। शेष बचा भाग लगभग 3 फुट 11 इंच ऊँचा है। इसका व्यास लगभग 1 फुट 6 इंच है। तल का व्यास अष्टकोणीय है। ऊपर की ओर यह सोलह कोणों वाला है। इसके उपरान्त फिर यह लिंग अष्टकोणीय है। इसके बाद पुनः लिंग 16 भागों में विभक्त होकर एकाकार हो गया है। लिंग का शीर्ष भाग गोलाकार निर्मित किया गया है। प्रतीत होता है। कि यह अभिलिखित शिवलिंग निर्माण के पश्चात् कालान्तर में गिर गया। इसका गोलाकार शीर्ष भाग शिवलिंग होना प्रदर्शित करता है। यह विष्णु पुराण में वर्णित निर्देशों में साम्य रखता है। डॉ. झा. ने भी इसे अभिलिखित शिवलिंग माना है। लिंगोपासना का दृश्य, एरण में विद्यमान मंदिरनुमा प्रस्तर फलक पर अंकित है। इस प्रतिमा में एक स्त्री को शिवलिंग की उपासना करते हुए प्रदर्शित किया गया है। गोपाबाई के टीले पर इसी शिवलिंग के समीप एक विशालकाय नंदी भी रखा हुआ है। यह गुप्तकालीन कला में निर्मित लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित है।[50]

**गुप्तकालीन शिवलिंग :-**

एक अन्य गुप्तकालीन शिवलिंग एरण ग्राम में दानवीर टीले पर दृष्टव्य है। इस शिवलिंग को दो भागों में बनाया गया है। यह बलुआ लाल पत्थर पर निर्मित लगभग 7 फिट लम्बाई एवं 1.2 वर्गमीटर चौड़ाई का है।[51]

परवर्ती गुप्तकाल में एरण क्षेत्र में प्रमुख रूप से हिन्दुधर्म से संबंधित देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण हुआ है। जैन धर्म सें संबंधित एक प्रस्तर प्रतिमा यहाॅ से प्राप्त हुई है। बुद्ध प्रतिमा का सिर भी एरण ग्राम के एक चबूतरे पर दृष्टव्य है।

एरण के मंदिर परिसर के पास मकर संक्रांति के पावन पर्व पर प्रत्येक वर्ष दो दिवसीय मेला लगता है। जिसमें सम्मिलित होने के लिए बुन्देलखण्ड सहित पूरे प्रदेश से हजारों की संख्या में श्रद्धालुजन एकत्रित होते है। महाविष्णु मंदिर एवं महावराह मंदिर के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रृद्धा दर्शित होती है। मान्यता है कि यहाँ उनकी मनोकामना पूरी होती है।

बुन्देलखण्ड के प्राचीनतम धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक केन्द्र एरण का भारतीय पुरातत्व व संस्कृति में विशिष्ट योगदान है। एरण गुप्तकालीन प्रतिमाओं की विशालताओं व प्राचीनता की दृष्टि से मध्यप्रदेश में साँची के पश्चात ऐतिहासिक

पुरातात्विक महत्व के आधार पर पर्यटकों को भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण पुरास्थल माना जा सकता है। मूर्ति कला के स्वरूप और उसके क्रमिक विकास के अध्ययन हेतु दीर्घ समयावधि एरण ने प्रदान की है। आद्यऐतिहासिक काल के प्रारंभिक चरण से लेकर 18 वीं सदी ईस्वी तक के कलावशेष एरण से ज्ञात हुए हैं। गुप्तकालीन कला के अनुपम उदाहरण एरण से मिले हैं। एरण से विष्णु की प्रतिमा, महावराह (पशुवराह) की प्रतिमा, गरूड़ स्तम्भ भारतीय कला में अपना विशिष्ठ स्थान रखते है।

एरण का पुरास्थल अभी तक विकास की राह देख रहा है। देशी व विदेशी पर्यटक असुविधाओं के अभाव में भी एरण की गुप्तकालीन कला को देखने नहीं आते हैं। केन्द्र सरकार, मध्यप्रदेश सरकार व मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा एरण में पर्यटकों को आने जाने के लिए पक्की सड़क बनवाकर पर्यटकों के लिए गेस्ट हाऊस निर्मित कर व एरण की जीवनदायनी बीना नदी के अथाह जलराशि में पर्यटकों को नौकायन की सुविधा प्रदान कर इस पुरास्थल को पर्यटकों के लिए सुविधाजनक व आकर्षक बनाया जा सकता है।

**सन्दर्भ -**


1. दुबे, नागेश एरण की कला, सागर 1997, पृ.3
2. सिंह, उदयवीर : 'एरण ए चालकोलिथिक सेटलमेंट' बुलेटिन ऑफ इण्डियन हिस्ट्री एण्ड ऑक्योंलॉजी, सागर विश्वविद्यालय, सागर 1969, अंक 1 पृ. 29
3. मोहन, लाल : एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति, कृष्णा कम्प्यूटर एण्ड ऑफसेट, सागर मध्यप्रदेश, 2009, पृ. 11
4. कनिंघम, अलेक्जेंडरः 'रिपोटर्स ऑफ टूर्स इन मालवा एण्ड बुन्देलखण्ड वाराणसी, 1966. पृ.46
5. एलन, जेः केटलाग ऑफ द क्वायंस ऑफ एन्शियेंट इण्यिा, लंदन 1891 पृ.99
6. द्विवेदी, चन्द्रलेखाः एरण का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1985 पृ.33
7. चढ़ार, सोहन, लालः एरण एक सांस्कृतिक धरोहर, आयु पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016.पृ.13-14
8. का, ई.ई. (कार्पस इंस्क्रप्सनम इण्डीकेरम) जिल्द - 3, पृ. 88-90
9. दुबे, नागेश, एरण क कला, सागर, 1997 पृ.7
10. सिह, कुष्णकुमारः उत्खनन से प्राप्त मृण्मूर्तियों का अध्ययन, दिल्ली, 2001, पृ.80
11. मोहन, लालः एरण की ताम्रपाषाण, संस्कृति, कुष्णा कम्प्यूटर एण्ड ऑफसेट, सागर, पृ.25
12. मोहन लालः एरण का सांस्कृतिक धरोहर, नई दिल्ली, 2016 पृ.18-19
13. वाजपेयी, के.डी. भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1967, इलाहाबाद, पृ.41-1964
14. वाजपेयी के. डीः भारतीय सुस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1967, इलाहाबाद पृ. 41-1964
15. मोहन लालः एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति, कृष्णा कम्प्यूटर एण्ड ऑफसेट, सागर पृ. 25
16. वही
17. झा, विवेकदत्तः पूर्वोक्त, (1986-87), पृ. 9
18. दूबे, नागेश एवं मोहनलाल, एरणः एक परिचय, अमरकंटक, 2016. पृ. 8
19. झा, विवेकदत्त पूर्वोक्त, (1986-87), पृ. 9-10
20. वही
21. का, ई.इ. जिल्द - 3 पृ. 158
22. कनिंघम, अलेक्जेण्डर, पूर्वोक्त, पृ. 89
23. मोहन, लालः एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति, कुष्णा कम्प्यूटर एण्ड ऑफसेट, सागर, मध्यप्रदेश, पृ. 19
24. वही पृ. 14
25. वाजपेयी, संतोष कुमार भारतीय ऐतिहासिक सिक्के, 1997, दिल्ली, पृ. 111
26. वाजपेयी, के. डी. भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1967, इलाहाबाद, 1964, पृ. 41
27. द्विवेदी, चन्द्रलेखा, एरण का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, दिल्ली, 1984, पृ. 3
28. वाजपेयी, के. डीः भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान, 1967, इलाहाबाद, पृ. 41-1964

29. द्विवेदी, चन्द्रलेखा, एरण का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास दिल्ली, 1984, पृ. 5
30. दुबे, नागेश एरण की कला, सागर 1997, पृ. 96
31. वही, पृ. 96
32. राव, टी. ए. गोपीनाथः एलीमेन्टस ऑफ हिन्दू आइक्रोनोग्राफी, खण्ड 1, 1968, पृ. 138
33. मोहन, लालः एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति, सागर 2009, पृ. 12
34. राव, टी. ढ.ए. गोपीनाथ. एलीमेन्टस ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, खण्ड 1, 1968, पृ. 92-94
35. का, ई.इ. जिल्द - 3 पृ.. 158
36. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर, 1997, पृ. 108
37. वही, पृ. 109
38. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, पृ. 85-71
39. दुबे, नागेश एवं मोहनलाल, एरणः एक परिचय, अमरकंटक, 2016, पृ. 20-21
40. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ. 104
41. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, पृ. 85,71
42. दुबे नागेश एवं मोहनलाल, एरणः एक परिचय, अमरकंटक, 2016, पृ. 23-24
43. दुबे, नागेशः की कला सागर 1997, पृ. 105-106
44. ब्रजभूषण श्रीवास्तव प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्मिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1998, पृ. 24
45. कनिंघम, अलेक्जेंडर : रिपोटर्स ऑफ दूर्स एन मालवा एण्ड बुन्देलखंड, वासाणसी, 1966, पृ. 46
46. ऋग्वेद, श्री सूक्त 5.87.25
47. दुबे, नागेशः एरण की कला, सागर 1997, पृ. 117
48. मोहनलाल, एरण एक सांस्कृतिक धरोहर, आयु पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 654
49. वही, पृ. 67
50. वही, पृ. 67-68
51. दुबे, नागेश एवं मोहनलाल, एरण : एक परिचय, अमरकंटक, 2016 पृ. 35

❐